NOTIFICATION NO - 597/2026

NOTIFICATION DATE - 09-04-2026

NAME - JAINUL ABEDIN

SUPERVISOR NAME - DR. ANIL KUMAR

DEPARTMENT- HINDI

TOPIC- BHUMANDLIKARAN KE DAUR ME HINDI UPANYASON ME CHITRIT PATRKARITA JAGAT KE YATHARTH KA ALOCHNATMAK ADHYAYAN

KEYWORDS :- भूमंडलीकरण, पत्रकारिता, यथार्थ, संघर्ष, द्वंद्व, मूल्य।

Findings

शोध में पत्रकारिता जगत संबंधित अध्ययन के बाद यह धारणा विकसित हुई है कि पत्रकारिता जितना दायित्वपूर्ण कर्म है, उसके नियमन के लिए समाज उतना ही आश्वस्त नज़र आता है जो पत्रकारिता सबकी खबर लेने के लिए जानी जाती है, उस पत्रकारिता की भी ख़बर रखने की आवश्यकता है। पत्रकारिता संस्थानों का स्वामित्व निजी संस्थानों के हाथों में न होकर इसका संचालन सहकारी संस्थानों की भांति होना चाहिए, जिससे पत्रकारिता संस्थान मानवोचित विकृतियों के साथ व्यावसायिक होने से भी बचे रहेंगे। सामान्यतः किसी भी उपक्रम को एक व्यक्ति या संस्था के अधिकार क्षेत्र में छोड़ने से उसमें विकृतियों का आना स्वाभाविक ही है। इससे न केवल संस्था की प्रतिबद्धता समाज के प्रति बढ़ेगी बल्कि इसके नियमन में भी सहयोग भावना बनी रहेगी। वर्तमान समय में पत्रकारिता की गिरती साख, बढ़ती अविश्वसनीयता को पत्रकारिता अपनी संरचना में पारदर्शिता द्वारा ही संभाल सकती है अर्थात पत्रकारिता अपनी गतिविधियों में पारदर्शिता लाकर अपने प्रति क्षरित विश्वास को पुनर्जीवित कर सकती है।

पत्रकारिता जगत को विज्ञापन आधारित व्यवस्था से मुक्त कर उसे उत्पाद या सेवा आधारित व्यवस्था में परिवर्तित करने से भी पत्रकारिता संस्थानों में समाज के प्रति दायित्व की भावना प्रबल होगी। दूसरे शब्दों में पत्रकारिता की आर्थिक व्यवस्था का भार उसके उपयोगकर्ताओं पर हो विज्ञापनों पर नहीं। भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी उपन्यासों में चित्रित पत्रकारिता जगत में व्याप्त बाजारवादी प्रवृत्तियों

ने पत्रकारों को उद्यमी और पत्रकारीय लेखन/प्रस्तुतिकरण को एक उत्पादन के रूप में प्रस्तुत कर पत्रकारिता की स्वायत्ता पर ही संकट खड़ा कर दिया है। पत्रकारिता संस्थान भले ही विशालकाय संरचना रखते हों इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि उनकी गुलामी ही की जाये बल्कि पत्रकार तो स्वयं एक संस्था होता है। यदि संस्थान पत्रकारीय मूल्यों के संरक्षण में असमर्थ दिखते हैं तब पत्रकारों का दायित्व बढ़ जाता है कि वे उसका प्रक्षालन करें। पत्रकारिता का प्रभाव व्यापक समाज पर दृष्टिगत होता है इसलिए यह एक दायित्वपूर्ण कर्म की तरह ही प्रयुक्त की जानी चाहिए है।